# परमात्मा का अस्तित्व

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

हम सभी एक विषय को लेकर आज तक बहस करते आ रहे हैं कि परमात्मा को किसने देखा है। वो है भी या नहीं। है तो कैसा है और नहीं है तो क्यों नहीं है। ऐसे उलझन वाले प्रश्नों के साथ सभी अपने आप को उलझाये हुए हैं। वाल्मिकी, कबीरदास, तुलसीदास, ईसा मसीह ने जो भी शास्त्र या महाकाव्यों की रचना करने वाले हैं, उन्होंने उस समय के हिसाब से अपने मन के अंदर परमात्मा के स्वरूप को बसाकर जिस रूप से चित्रित किया, लोगों ने जब उन महाकाव्यों को पढ़ा, महान रचनाओं को पढ़ा तो उनको पढ़कर उन्होंने वैसे मानसिक चित्र बनाये और मंदिरों की स्थापना कर दी कि शायद भगवान यही हैं। अब जिन्होंने परमात्मा के बारे में चर्चा की या कुछ लिखा, उन्होंने उस समय अपने विचारों से परमात्मा के भाव को या ऐसे कह सकते हैं कि परमात्मा कैसा होगा उस भाव को बड़े ही प्रेरक ढंग से और सजीव मन से समझा। लेकिन उस बात को कहने के लिए उन्होंने जैसा वर्णन किया, लोगों ने वैसा माना। लेकिन ये कोई भगवान नहीं थे, ये महान पुरुष थे, इन्होंने अपने विचारों से उस समय के समाज को प्रभावित किया तो लोगों ने इन्हें भी भगवान के टाइटल से नवाज़ा। इससे एक बात तो सिद्ध हो रही है कि अगर किसी क्षेत्र में कोई व्यक्ति बहुत नाम कमाये, उसमें महारत हासिल कर ले, तो उस समय के लोग उस पर्टीकुलर फील्ड के लिए कहते कि ये तो जैसे हॉकी के भगवान हैं या क्रिकेट के या बैडमिंटन के या फुट बॉल के, ये सब उदाहरण के लिए हैं। लेकिन वो भगवान तो नहीं है ना, ना उनके पास कोई चमत्कारिक शक्ति है, ना ऐसा कोई दिव्य अस्त्र है। लेकिन नवाज़ा गया, कहा गया, उनकी विचार पद्धति के आधार से। जब हम इन महाकाव्यों को पढ़ते हैं तो उनमें इनके द्वारा लिखे गये या कहे गये विचार के आधार से देखते हैं तो ये लोग परमात्मा को निराकार मानते हैं, उसके अस्तित्व को मानते हैं, लेकिन निराकार को समझने की ताकत नहीं है। आप देखिये जो भी इस दुनिया में परमात्मा के बारे में कोई बात करता है, वो हमेशा उन चीज़ों के साथ उसे जोड़ता है जो इन आँखों से देखी जा सकती हैं। लेकिन वो परमात्मा नहीं है। जैसे प्रकृति को देखकर, मूर्ति को देखकर हमारे अंदर भाव ज़रूर उठते हैं लेकिन उन मूर्तियों में परमात्मा के अस्तित्व को हम थोड़े ही मानते हैं। कटाक्ष के रूप में अगर देखा जाये तो परमात्मा सजीव व निर्जीव दोनों नहीं हो सकता। क्योंकि वो जन्म-मरण से न्यारा कहा जाता है। जबकि राम या अन्य देवतायें या महापुरुषों को शरीर छोड़ते और जन्म लेते हुए दिखाया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि वो निराकार है, अजन्मा है, अकर्ता है, अभोक्ता है, तो वो साकार में कैसे हो सकता है जो वे इन जड़ मूर्तियों में भगवान के अस्तित्व को मान रहे हैं।

## परमात्मा और विज्ञान की तुलना

परमात्मा के बारे में विज्ञान क्या कहता है? विज्ञान एक पदार्थ विज्ञान है जो चीज़ें दिखाई देती हैं, उसकी क्रिया, प्रक्रिया के आधार से अपना निर्णय देता है। विज्ञान कहता है कि हर कार्य के पीछे कोई न कोई क्रिया होती है या एक पदार्थ का अस्तित्व ही क्रिया-प्रतिक्रिया से बनता है। अब प्रश्न उठता है कि इस दुनिया में इन आँखों से जो भी चीज़ें दिखाई दे रही हैं वो सारी पदार्थ हैं या मैटर है। अब विज्ञान की ही मान लें तो विज्ञान खुद कहता है कि ऊर्जा न तो पैदा होती है, न नष्ट होती है। सिर्फ वो अपने स्वरूप को बदल देती है। इससे एक प्रश्न उठता है कि जो न पैदा होती है और न नष्ट होती है उस पदार्थ का जन्म कहाँ से हुआ? तो अगर विज्ञान इसी के बारे में तर्क दे दे सबसे पहले, तब तो उसकी बातों पर कुछ विश्वास किया जा सकता है। वो भगवान को या ईश्वर को या परमात्मा को कैसे प्रूव कर सकते हैं? विज्ञान ये भी कहता है कि जो चीज़ दिखाई नहीं देती, उसका अस्तित्व कैसा? तो इस पर तर्क है कि ज़रूरी नहीं है कि जो चीज़ दिखाई न दे वो हो ही नहीं। जैसे इन आँखों से हम चीज़ों को देखते हैं तो उसका अस्तित्व मानते हैं लेकिन इन आँखों को खुद देखने के लिए हमें आईने की ज़रूरत होती है। हम खुद अपनी आँखों को नहीं देख सकते तो क्या आँखें नहीं हैं! इसी प्रकार दूध में मक्खन, दही और घी का अस्तित्व है वो दिखाई नहीं देता, फिर भी हम मानते हैं। ठीक इसी प्रकार लोहे को गर्म देखकर अग्नि का हम अस्तित्व मानते हैं, पत्ते उड़ते हुए या कोई चीज़ लहरा रही है, उसे देखकर हम हवा का अस्तित्व मानते हैं। दिखाई तो वो भी नहीं दे रही। लेकिन हम मान तो रहे हैं ना! इसलिए विज्ञान ईश्वर के बारे में कोई तर्क दे ही नहीं सकता, क्योंकि वो तो सिर्फ भौतिक चीज़ों पर जो घटनायें घट रही हैं, उसी को देखता है और मानता है। लेकिन भौतिक चीज़ों का जन्म कैसे हुआ इसका ही उत्तर उसके पास नहीं है तो फिर परमात्मा को कैसे जानेगा! जो साइंस पूरी तरह से पदार्थ विज्ञान है और वो जो देखता है उसे मानता है। परमात्मा तो न दिखता है और न साइंस के द्वारा जाना जा सकता है।

## हमारी नज़र में परमात्मा कौन?

परमात्मा तर्क और विज्ञान दोनों से परे एक शक्ति है जो सिर्फ अनुभव और अध्यात्म के द्वारा जानी जा सकती है। हमारी नज़रें सामने कोई भी चीज़ जो पड़ी हुई है उसको देखने के लिए भी कई बार सूक्ष्मदर्शी या चश्मे का सहारा लेती है और अगर आप इसको सूक्ष्मदर्शी से देखें तो हरेक चीज़ में मूवमेंट हो रही है। यानी हर पदार्थ में इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन, मेसॉन, पाइमेसॉन आदि-आदि घूम रहे हैं। तो हम उनको स्थिर देख ही नहीं सकते। इसलिए जब भी हम कोई चित्र या मूर्ति देखते हैं, तो कभी ऊपर देखते कभी नीचे, कभी आँखें देखते कभी पैरों को। ये सारी जड़ मूर्तियां हमारे ध्यान को एकाग्र करवा ही नहीं सकतीं। जैसे हमने बात की कि इन आँखों से परमात्मा को देखना और विज्ञान की नज़रों से देखना, दोनों तर्कसंगत बिल्कुल भी नहीं है। लेकिन उसका अस्तित्व है, ये भी हमको मानना है। इस दुनिया में कुछ चीज़ें तर्क से परे हैं जिनको हम मानकर चलते हैं, अंधविश्वास से नहीं, अनुभव से। जैसे उदाहरण में अगर जल्दी से बोला जाये तो लोग कहते हैं कि एक के बाद दो आता है, दो के बाद तीन आता है, तीन के बाद चार आता है, लेकिन ये आपका एक विश्वास हो सकता है लेकिन सत्य नहीं है। वो ऐसे कि एक के बाद दो आता है ये फैक्ट नहीं है, एक के बाद 1.1, 1.2, 1.3, 1.4, पौने दो, फिर दो आता है। एक के बाद सीधे दो थोड़े ही आता है। लेकिन हम मानते हैं कि एक के बाद दो आता है। ये हमारा विश्वास है और इसी के आधार से हम चल रहे हैं। तो परमात्मा है, लेकिन उसके लिए पहले हमें खुद के अस्तित्व को समझना पड़ता है। जिस प्रकार हम एक शरीर या पदार्थ से अलग पराभौतिक(मेटा फिज़िकल एनर्जी) शक्ति हैं, जो हमारे इस पूरे शरीर रूपी पदार्थ को एनर्जाइज़ करती है। उसी प्रकार से परमात्मा भी एक पराभौतिक शक्ति है, सिर्फ वो पदार्थ के अन्दर प्रवेश नहीं करता, वो है, स्थिर है, एक स्थान पर है, अजर है, अमर है, अविनाशी है, अव्यक्त है, निराकार है, लेकिन है। अब उस परमात्मा निराकार जो कि इस पदार्थ के प्रभाव से न्यारा है, इस साकार लोक से बिल्कुल अलग है, उसको जानने के लिए हमें भी उस स्वरूप को समझना पड़ेगा। तो जैसे मैं आत्मा या रूह या प्राण या सोल जो इस शरीर की मालिक, शरीर से अलग हूँ, वैसे ही परमात्मा सुप्रीम सोल, शरीर रहित, लेकिन एक ज्योति पुंज के रूप में इस साकार लोक से परे परमधाम का निवासी है। तो उस लोक को समझने के लिए इस लोक से हमें पार जाना पड़ेगा लेकिन अनुभव से। तब हम परमात्मा को थोड़ा बहुत जान पायेंगे। तो परमात्मा है, निराकार है, लेकिन इन आँखों से दिखाई देने वाली जो भी मूर्तियां हैं वो केवल भगवान की संज्ञा वाले हैं, भगवान नहीं हैं।

**प्रश्न : हिन्दु धर्म में विशेष करके ये माना जाता है कि तुम जैसा कर्म करोगे वैसी योनि में जाकर जन्म लोगे। हो सकता है तुम गधे बन जाओ, कुत्ते की योनि में चले जाओ, साँप, बिच्छू बन जाओ। तो ये 84 लाख योनियां दिखाई जाती हैं विशेष। उससे भी व्यक्ति बहुत डरता है कि कहीं मैं जाकर साँप न बन जाऊं या गधा न बन जाऊं। इसके पीछे क्या है कुछ स्पष्ट करें?**

**उत्तर :** पहले तो मैं सभी को ये खुशखबरी सुना दूं कि गधा, कुत्ता, बिल्ली कोई नहीं बनेगा, सांप भी आप नहीं बनेंगे। आप मनुष्य ही बनेंगे। लेकिन जैसे कर्म होंगे वैसी ही उसको देह प्राप्त हो जायेगी। वैसा ही उसको परिवार प्राप्त होगा। वैसी ही सुख-सुविधाएं, कष्ट, अमीरी या गरीबी सब कुछ वैसे ही प्राप्त होगी। इसीलिए मुख्य रूप से अपने कर्मों पर बहुत ध्यान देना चाहिए। हम तो देखते हैं बिल्कुल क्लीयर कोई कुत्ते भी तो कारों में घूम रहे हैं। कई घरों में किसी कुत्ते की भी बहुत अच्छी पालना हो रही है। उनकी बहुत अच्छी खातिरी हो रही है। तो ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि मनुष्य की आत्मा दुःख भोगने जानवरों की योनि में गई। मनुष्य अपने कर्मों का फल मनुष्य योनि में ही भोग रहा है। कोई जन्म से ही भोगना शुरु कर देता है। कोई जन्म लिया और विकलांग है। इसीलिए मनुष्य जैसा कर्म करता है उसी अनुसार वो फल भोगता है, यही सत्य है। अन्त मते सो गते प्रसिद्ध है। जो ज्ञाता हैं, विद्वान हैं वो जानते हैं कि मनुष्य की अन्तिम जैसी फीलिंग होती है वैसा ही उसका नेक्स्ट बर्थ होता है। और अन्तिम फीलिंग कभी भी किसी की जानवर के प्रति नहीं होती। अन्त में कोई भी बन्दर को याद नहीं करता, बिल्ली को याद नहीं करता, सांप को याद नहीं करता। उसे याद आयेगी तो अपने मनुष्य सम्बन्धियों की, अपने बच्चों की या पत्नी की, जिससे उसका बहुत प्यार है, मोह है। या याद आयेगी उसे अपने कर्मों की। तो अन्त में यदि उसकी स्मृति ही जानवरों की तरफ नहीं है वो जानवर योनि में जायेगा कैसे? दूसरी एक चीज़ जो सबसे गुह्य है। सभी इस बात पर विचार करें दो बीज ले लें एक आम का और एक गेहूँ का। गेहूँ के बीज से चने का पौधा नहीं उगेगा। आम के बीज से जामुन का पेड़ नहीं उगेगा। तो क्या समझा जाये कि उस बीज में ही उस वृक्ष का सबकुछ समाया हुआ है। वो शुरु कैसे होगा, शुरु से एक फाडें चलेंगी या एक लम्बी डंडी चलेगी। गेहूँ जिन्होंने देखें हैं वो एक लम्बी डंडी, और चना बोयेंगे तो शुरु से ही फटने लगेंगी कई शाखायें। मतलब उस बीज में ही सबकुछ समाया हुआ है। अब सूक्ष्मता से चिंतन करें, आत्मा मनुष्य की बिल्कुल अलग और गाय की बिल्कुल अलग। ये दो उदाहरण लेता हूँ

मनुष्य की आत्मा और गाय की आत्मा। गाय की आत्मा बीज है गाय के शरीर का जिससे निर्माण होगा। अभी मनुष्य की आत्मा गाय के गर्भ में चली गयी तो उसकी आत्मा जो मनुष्य देह का बीज है उससे गाय के बछड़े का निर्माण होगा ही नहीं। क्योंकि उसमें वो संस्कार ही नहीं। क्योंकि आम की गुठली में जामुन के वृक्ष का फल का, फूल का कुछ भी समाया नहीं है वैसे ही मनुष्य आत्मा में किसी जानवर के देह के विकास का कुछ भी समाया नहीं है। इसीलिए मनुष्य आत्मा दूसरी योनियों में जा ही नहीं सकती।

**प्रश्न : मैं छत्तीसगढ़ से विजयलक्ष्मी साहू हूँ। मेरी बेटी 25 साल की है। उसको सात साल से स्किन प्रॉबल्म है। बहुत से डॉक्टर्स से ट्रीटमेंट भी करवा चुके हैं लेकिन रिज़लट कुछ भी नहीं। कृपया कुछ सुझाव दें कि क्या किया जा सकता है?**

**उत्तर :** स्पिरिचुअल प्रैक्टिस आपको सूझा रहा हूँ, आप उसका बहुत अच्छा प्रयोग करें। मेडिकली तो आपने सबकुछ कर ही लिया है। एक तो बहुत अच्छा प्रभाव होता है चार्ज वॉटर का। एक गिलास में पानी लें उसको दृष्टि देकर सात बार संकल्प करेंगे मैं परमपवित्र आत्मा हूँ। अब पानी में ये पवित्र वायब्रेशन चले गए। और सबको ये जानना चाहिए। पवित्रता के जो वायब्रेशन हैं, उसकी जो शक्ति है, वो रोगों को ठीक करने में सबसे बड़ी भूमिका निभाती है। तो पानी पवित्र वायब्रेशन से चार्ज हो गया। अब आधा गिलास तो आप पी लें और आधा लगा लें और अगर मान लो पूरे ही बॉडी में हो गया है एक या आधी बाल्टी को ही चार्ज करके पूरा स्नान ही कर लें। दूसरा सोते समय जब हमें नींद आने को हो तो हमारा सब्कॉन्शियस माइंड एक्टिव हो जाता है। उस समय पाँच बार संकल्प कर लें आप कि मेरी स्किन डिसीज़ बिल्कुल ठीक हो गई है। मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। मैं इस स्किन डिसीज़ से मुक्त हूँ। पाँच बार इस तरह के विचार करते-करते सो जाना है। तो सारी रात सब्कॉन्शियस माइंड हीलिंग का काम करता है। और इस बीमारी का निदान करने में बहुत बड़ी भूमिका निभायेगा। तीसरा, अध्यात्म से जो जुड़ा होता है उसको ये पता होता है कि हमारे साथ जो होता है वो हमारे पास्ट लाइफ के कर्मों से जुड़ा हुआ होता है। भले वर्तमान भी कारण हैं, मेडिकली तो जानते ही हैं कि कहीं ब्लड इम्प्योर हो गया। कई कारण हो सकते हैं। इसीलिए 21 दिन तक, इस स्वमान के साथ कि मैं परमपवित्र आत्मा हूँ और इस देह रूपी प्रकृति की मालिक हूँ एक घंटा अच्छा मेडिटेशन फिक्स कर लें। और इसमें एक अभ्यास और कर लेंगे कि मैं आत्मा यहाँ हूँ और मुझसे प्योर सफेद एनर्जी, ब्रेन में और पूरे शरीर में फैल रही है। थोड़ी-थोड़ी देर भी, एक-एक मिनट में कि मेरी पूरी बॉडी में फैल रहे हैं। जिसे वो सबकुछ क्लीन कर रहे हैं अन्दर में। इसका बहुत ही सुन्दर इफेक्टिव रिज़ल्ट रहेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com